संकल्पों का वर्ष 2024

रामअवतार बैरवा

कहते हैं बीती बातों को हमेशा भुला देना चाहिए पर सच में देखा जाए तो बीती बातों से ही सुनहरा कल बनता है। गलतियों से ही सुधार की प्रक्रिया शुरू होती है। एक कवि जब अपनी कविता को फिर, फिर पढ़ता है, हर बार उसे अनेक कमियां नज़र आती हैं। एक उम्र के बाद तो हर बात ही कमियों से भरी होती है। वक्त हर पल हमें सिखाता है। हर पल हमें बनाता है।

हम २०२३ में जो थे, आने वाले साल में निश्चित रूप से उससे बेहतर होंगे और होना भी चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है तो समझना चाहिए कि बुद्धि का क्षरण हो रहा है। कविता या साहित्यिक धरातल पर ऐसा कभी नहीं होता । साहित्य हर पल हमें नया ज्ञान और नया विश्वास देता है। कोई कम उम्र का कवि या साहित्यकार कई बार उम्र दराज कवि या साहित्यकार से अधिक यश और धन प्राप्त कर लेता है पर बुद्धि और अनुभव के आगे वह हरदम छोटा ही रहता है। वास्तविक संघर्षों की परिणति उससे उम्रिक संख्या में पीछे ही रहती है। साहित्य की भाषा में इसे सम्मान भी कहा जाता है। अगर कवि या साहित्यकार में यह अन्तराल एक दशक का हो तो वह एक नये युग के नाम से जाना जा सकता है। आज से दस साल पहले सोशल मीडिया पर यदि कोई अपनी रचना पोस्ट करता था तो उसे उतना सम्मान नहीं मिलता था पर जब एक बड़ा वर्ग इसकी तरफ उन्मुख हुआ, खासकर युवा तो अन्य जगह से साहित्य कम होता गया। जब लोगों को मुफ्त में साहित्य पढ़ने को मिल जाएगा तो वह पैसे खर्च करके क्यों पढ़ेगा ? इसी के चलते कई पत्र-पत्रिकाएं बंद हुई । पुस्तकें छपना भी औसतन कम होती चली गई। आज अनेक पत्र-पत्रिकाएं ई फार्मेट में हैं और खूब पढ़ी जा रहीं हैं । कोरोना ने हर हाथ में पूरी दुनिया थमा दी है। गरीब के बच्चे को भी ओनलाइन क्लास के लिए मोबाइल लेना पड़ा था। अब वह भी उसका आदी हो चुका है । हर प्रकार के लेन-देन के लिए यही माध्यम रह गया है। हालांकि नयी पीढ़ी को यह अनेक तरह से प्रभावित कर रहा है। उसके दिल, दिमाग से लेकर हर अंग जंगित हो गया है। शरीर में अनेक तरह की बीमारियां प्रवेश कर चुकी हैं । कोरोना कोई इतनी बड़ी बीमारी नहीं थी, बस प्रतिरोधक क्षमता शरीर में नहीं रह गई थी । आदमी के अलावा हर जीव को अपने भोजन के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता है। इसी से उसकी प्रतिरोधक क्षमता बनी रहती है । अधिकांश व्यक्ति आरामदेह हैं । मेहनत करना ही नहीं चाहते । कोरोना ने उन्हें ही घेरा था । निश्चित रूप से आने वाला कल और घातक रहने वाला है । शहर के बाजार से निकला जाए तो एक सौ दुकानों के बाद कोई देशी खाद्य की दुकान मिलती है । छाछ, लस्सी , दलिया, मक्का -बाजरा की जगह फास्ट फूड और पेय पदार्थों ने ले ली है। खेल और दौड़ भाग की जगह मोबाइल गेम्स ने ले ली। मेल-मिलाप और और तीज-त्योहार सोशल मीडिया की शोभा बन गए हैं । समाधान तलाशे जाएं तो दूर-दूर तक दिखाई नहीं देते । बचाव का माध्यम साहित्य की गलियों से निकल सकता है । हमारी प्राचीन पद्धतियों, ऋषि मुनियों की उम्र का राज , उनके द्वारा किए गए साहित्य के उपाय से ही पूरी दुनिया की राह आसान हो सकती है । 2024 को हर क्षेत्र में बहुत भाग्यशाली माना जा रहा है । वर्ष का आरंभ भी नये सप्ताह के साथ हो रहा है। निश्चित रूप से रविवार की छुट्टी एक नयी ताजगी देती है। बीती बातों को रविवार समझकर भुला देना चाहिए । गणितीय दृष्टि से 2024 बहुत ही फलदाई वर्ष है । व्यक्ति यदि 12, 12 वर्ष के गुणक में पीछे जाकर देखे तो बहुत बेहतरीन परिणाम मिलेंगे । यह अनेक संकल्पों और विकल्पों का वर्ष है। अगर मन को दृढ़ किया जाए तो सारे संकल्प पूर्ण हो सकते हैं ।

रोहिणी, दिल्ली

 ISSN:2583-8849